EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा

कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : २
पाठ का नाम :दुःख का अधिकार
PPT 4

7. भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता।

बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे डलिया में समेटकर बाजार की ओर चली - और चारा भी क्या था?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या -

लेखक कहता है की भगवाना तो परलोक चला गया और घर में जो कुछ भी अनाज और पैसे थे वह सब उसके अन्तिम संस्कार करने में लग गए। लेखक कहता है कि बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लग गए। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिए लेकिन बहू को क्या देती?

बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता। क्योंकि समाज में माना जाता है कि कमाई केवल लड़का कर सकता है और उस औरत के घर में कमाई करना वाला लड़का मर गया था तो अगर कोई उधार देने की सोचता तो यह सोच कर नहीं देता कि लौटाने वाला उस घर में कोई नहीं है। यही कारण था कि बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे टोकरी में समेटकर बाजार की ओर बेचने के लिए आ गई। उस बेचारी औरत के पास और चारा भी क्या था?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

8. बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए फफक-फफकर रो रही थी।

कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली है, हाय रे पत्थर-दिल!

उस पुत्र-वियोगिनी के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी।

उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डा◌ॅक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

शब्दार्थ –

पुत्र-वियोगिनी – पुत्र को खोने वाली

पुत्र-वियोग – पुत्र के बिछड़ने के दुःख

मूर्छा – बेहोश

हरदम – हमेशा

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या –

लेखक कहता है कि बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके बाजार तो आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए अपने लड़के के मरने के दुःख में बुरी तरह रो रही थी। लेखक अपने आप से ही कहता है कि कल जिसका बेटा चल बसा हो, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली आई है, इस माँ ने किस तरह अपने दिल को पत्थर किया होगा?

अपने पुत्र को खोने वाली उस माँ के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए लेखक पिछले साल उसके पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह बेचारी महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से ही नहीं उठ पाई थी।

उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र के बिछड़ने के दुःख के कारण से बेहोशी आ जाती थी और जब वह होश में होती थी तो भी उसकी आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डा◌ॅक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। हमेशा सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उसका इस तरह पुत्र की याद में दुखी रहने के कारण से दुखी हो उठता था।

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

9. जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं। उसी हालत में नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता मैं चला जा रहा था।

सोच रहा था - शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

शब्दार्थ –
सूझ – समझदारी
सहूलियत – सुविधा

व्याख्या –
लेखक कहता है कि जब कभी हमारे मन को समझदारी से कोई रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी हो जाती है जिसके कारण कदम तेज़ हो जाते हैं। लेखक भी उसी हालत में नाक ऊपर उठाए चल रहा था और अपने रास्ते में चलने वाले लोगों से ठोकरें खाता हुआ चला जा रहा था और सोच रहा था कि शोक करने और गम मनाने के लिए भी इस समाज में सुविधा चाहिए और... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow